

Newspaper Clips September 27, 2016

Dainik Jagran ND 27.09.2016 P-18

आइआइटी दिल्ली के नवीन गर्ग को शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार

नई दिल्ली, प्रेटर : आइआइटी कानपुर के दो और दिल्ली के एक प्रोफेसर को विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रतिष्ठित शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार से नवाजा जाएगा। सीएसआइआर के प्लेटिनम जुबली कार्यक्रम में इन पुरस्कारों की घोषणा की गई। इन पुरस्कारों की सूची में हालांकि कोई भी महिला वैज्ञानिक नहीं है।

आइआइटी कानपुर के अविनाश कुमार अग्रवाल को इंजीनियरिंग साइंसेज, आइआइटी कानपुर के ही सुब्रह्मण्य अनंत रामकृष्ण को आइआइएससी के सुधीर कुमार वेमपति के साथ संयुक्त रूप से फिजिकल साइंसेज और आइआइटी दिल्ली के नवीन गर्ग को मैथमेटिकल साइंसेज वर्ग में यह पुरस्कार दिया जाएगा। बंगलुरु स्थित इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस (आइआइएससी) के ऋषिकेश नारायण और कोलकाता सीएसआइआर इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ केमिकल बायोलॉजी के सुवेन्द्र नाथ भट्टाचार्य को बायोलॉजिकल साइंस, पार्थ सारथी मुखर्जी को केमिकल साइंसेज, सुनील कुमार सिंह को अर्थ, एटमॉस्फियर, ओशियन और प्लैनेटरी साइंसेज वर्ग में यह सम्मान दिया जाएगा।



नवीन गर्ग

- ◆ आइआइटी कानपुर के अविनाश कुमार अग्रवाल को इंजीनियरिंग साइंसेज में दिया जाएगा पुरस्कार

माइक्रोसाफ्ट रिसर्च इंडिया के वेंकट नारायण पद्मनाभन को इंजीनियरिंग साइंसेज और मुंबई स्थित टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च को मैथमेटिकल साइंसेज वर्ग में पुरस्कृत किया जाएगा। मेडिकल साइंस वर्ग में यह सम्मान नियाज अहमद एएस को मिलेगा। देहरादून स्थित सीएसआइआर-इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पेट्रोलियम को फिजिकल साइंसेज और इंजीनियरिंग वर्ग में सीएसआइआर टेक्नोलॉजी पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। लखनऊ स्थित सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिसिनल एंड एरोमैटिक प्लांट्स और सीएसआइआर के नेशनल बायोलॉजिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट को लाइफ साइंसेज वर्ग का पुरस्कार मिलेगा। इन्वैशन वर्ग में बंगलुरु स्थित सीएसआइआर के नेशनल एयरोस्पेस लेबोरेट्रीज को पुरस्कृत किया जाएगा।

सफलता

इसरो उपग्रह प्रक्षेपण में शतक के करीब

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) अब 'शतक' बनाने की ओर अग्रसर हो चुका है। इसरो का सेंक्रेट पीएसएलवी सी-35 ने सोमवार को स्कैटसेट-1 समेत 8 उपग्रहों का सफल प्रक्षेपण किया। इनमें से पांच विदेशी (3 अल्जीरिया, 1-1 कनाडा-अमेरिका) उपग्रह थे। विदेशी उपग्रहों की लॉन्चिंग के मामले में इसरो ने गिनती अब 79 तक पहुंच चुकी है। एक दर्जन और विदेशी उपग्रहों को लेकर कई देशों से अनुबंध हो चुका है।

79 विदेशी उपग्रह अब तक लॉंच कर चुका

5 विदेशी उपग्रह सोमवार को लॉंच किए गए

2 उपग्रह अगले महीने लॉंच करने हैं, करीब एक दर्जन उपग्रहों के लिए भी अनुबंध

अब नए लक्ष्य की तैयारी

● जीसेट-18 समेत कई उपग्रहों का प्रक्षेपण प्रेच गयाना से अगले महीने करने की योजना
● जीएसएलवी मार्क-3 को सफलतापूर्वक अंत तक लॉंच करने की तैयारी
● रिसॉर्ससेट 2ए नवंबर में प्रक्षेपित किया जाएगा

एशियाई ताकत बनने की ओर

इसरो एशियाई ताकत बनने की ओर अग्रसर हो चुका है। बहुत सी चीजों में उसने चीन, जापान की अंतरिक्ष एजेंसियों को पीछे छोड़ दिया।

- 20 उपग्रह एक साथ लॉंच कर चीन की बराबरी की।
- जापान अब तक सिर्फ 8 उपग्रह ही एक साथ लॉंच कर पाया है।
- 34 में से 32 सफल प्रक्षेपण के साथ पीएसएलवी दुनिया का सबसे सफल लॉंचर
- पहले ही प्रयास में मंगल मिशन में सफलता पाने वाला देश
- ट्रांस इंडन वाले सेंक्रेट की लॉन्चिंग में भारत पहले नंबर पर।
- कम्युनिकेशन सैटेलाइट तकनीक लॉंच के मामले में भारत चीन-जापान से आगे।

बढ़ रहा राजस्व

280 करोड़ रुपये के ऑर्डर अगले 2-3 साल तक के लिए पहले से बुक

1790 करोड़ रुपये की कमाई इस साल अब तक

ऐसे मुश्किलों को दी मात

16 मिनट 56 सेकंड में 730 किलोमीटर की ऊंचाई हासिल करने के बाद चौथे चरण का इंजन बंद किया गया।
17 मिनट 33 सेकंड में स्कैटसेट-1 सेंक्रेट से अलग हो गया और अपनी कक्षा में पहुंच गया।
1 घंटे 22 मिनट 58 सेकंड में चौथे चरण का इंजन फिर से शुरू किया गया।

2.15 घंटे में दो कक्षाओं में पहुंचाए आठ उपग्रह

कक्षा 1
धरती से ऊंचाई
730
किलोमीटरकक्षा 2
धरती से ऊंचाई
670
किलोमीटर

21

देशों के उपग्रह लॉंच कर चुका इसरो

“

‘यह बहुत ही गर्व और खुशी का समय है। हमारे अंतरिक्ष वैज्ञानिक नित नया इतिहास रच रहे हैं। अपने उत्साह से वे भारत का नाम दुनिया में रोशन कर रहे हैं।’
-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

छात्रों के उपग्रह भी लॉंच

पीएसएलवी सी-35 अपने साथ आईआईटी मुंबई का 'प्रथम' व बेगलूर विश्वविद्यालय का 'मिनाट' उपग्रह लेकर गया है। प्रथम का वजन 10 किलोग्राम व मिनाट का 5.25 किलोग्राम है। करीब 8 साल में बने 'प्रथम' का मकसद इलेक्ट्रॉन की गणना का अनुमान लगाना है।

पांच विदेशी उपग्रह भी

‘अलसेट 1-बी’ (अल्जीरिया): कृषि, आपदाओं पर नजर रखने के लिए।
‘अलसेट 2-बी’ (अल्जीरिया): रिमोट सेंसिंग सैटेलाइट। मल्टीस्पेक्ट्रल तस्वीरें खींचने में कारगर।
‘अलसेट 1-एन’ (अल्जीरिया): छात्रों द्वारा तैयार 7 किलो वजन की नैनोसैटेलाइट।
प्राएलएस-19 (कनाडा): अंतरिक्ष का कचरा कम करने के लिए बनाई गई।

“

‘हम इस साल के अंत के लिए ऐतिहासिक ‘जीएसएलवी मार्क-3’ अभियान की योजना बना रहे हैं। हमारे पास मानवीय अंतरिक्ष कार्यक्रम भी है। मतलब, आने वाले दिन रोमांचक होने वाले हैं।’
-ए.एस. किरण कुमार, इसरो के अध्यक्ष



आईआईटी में हिंदी भाषी छात्र पढ़ाई में पिछड़े

अंग्रेजी की स्पेशल कोचिंग समेत हिंदी में पाठ्यक्रम पूरा करवाने के बाद भी सुधार नहीं, इस सत्र में 60 छात्र टर्मिनेट

आईआईटी में अंग्रेजी की स्पेशल ग्रूमिंग शुरू

सीमा शर्मा
नई दिल्ली।



बीटेक पहले वर्ष में दाखिला लेने वाले 10 हजार छात्रों में से 30-40% को भाषाई समस्या

लेक्चर तो अंग्रेजी में ही लगते हैं क्योंकि इंजीनियरिंग की ये कितानें हिंदी में उपलब्ध नहीं हैं। हालांकि, हिंदी भाषी छात्रों के लिए फेकल्टी उनकी सुविधा के लिए हिंदी में समझाती है लेकिन तकनीक को हिंदी में कैसे बताया जा सकता है। फिलहाल पांच छात्र टर्मिनेट हुए हैं। वहीं, आईआईटी कानपुर में 14 वहीं, गुवाहाटी में छह छात्र इस समस्या के चलते टर्मिनेट किए गए हैं। उधर, आईआईटी दिल्ली के सूत्रों के मुताबिक, 20 छात्रों को टर्मिनेट किया गया है।

भाषा की समस्या का आंकड़ा बढ़ने के चलते देशभर के आईआईटी में अंग्रेजी की विशेष क्लासेस इस सत्र से शुरू की जा रही हैं। बीएचयू में पहले तीन हफ्ते सिर्फ अंग्रेजी व ग्रूमिंग की कक्षाएं लगती हैं। वहीं, कानपुर, रुड़की, गुवाहाटी, दिल्ली समेत अन्य आईआईटी में हिंदी व क्षेत्रीय भाषायी छात्रों की पहचान कर उन्हें शनिवार व रविवार को विशेष अतिरिक्त क्लास में पाठ्यक्रम की पढ़ाई हिंदी में करवायी जा रही है।

देश के प्रतिष्ठित संस्थाओं में अंग्रेजी के वर्चस्व के कारण हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषा के छात्रों की परेशानी बढ़सतूर जारी है। कुछ ऐसी ही स्थिति कठिन प्रवेश परीक्षा पास कर आईआईटी में दाखिला लेने वाले हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषा के छात्रों की है। क्षेत्रीय भाषा में भी प्रवेश परीक्षा देने का विकल्प होने के कारण दाखिला पाने में कामयाब होने वाले ऐसे छात्र पाठ्यक्रम की पढ़ाई

में पिछड़े रहे हैं, क्योंकि पाठ्यक्रम की पढ़ाई मुख्य रूप से अंग्रेजी में होती है।

इस साल आईआईटी के बीटेक कोर्स में दाखिला लेने वाले करीब 10 हजार छात्रों में से 30 से 40 फीसदी के सामने भाषा की समस्या है। अंग्रेजी की स्पेशल कोचिंग और

हिंदी में अतिरिक्त क्लास लगवाए जाने के बावजूद प्रदर्शन में सुधार न होने पर इस साल करीब 60 से अधिक छात्रों को टर्मिनेट किया जा चुका है।

आईआईटी रुड़की के डायरेक्टर प्रोफेसर प्रदीप्ता बनर्जी के मुताबिक, केमिस्ट्री, मैथ्स और फिजिक्स के

Dainik Jagran ND 27.09.2016 P-17

माइक्रोस्कोप भी हुआ माइक्रो

जागरण संवाददाता, कानपुर : चौंकि नहीं! अब आप माइक्रोस्कोप को जेब में रखकर कहीं भी घूम सकते हैं, वह भी उसे मोड़कर। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) कानपुर के छात्र रहे डॉ. मनु प्रकाश ने एक ऐसा माइक्रोस्कोप विकसित किया है जिसे जेब में मोड़कर रखा जा सकता है। इस माइक्रोस्कोप से आने वाले समय में चिकित्सकीय जांच में व्यापक सुधार देखने को मिलेगा।

आइआइटी में कंप्यूटर साइंस से बीटेक के छात्र रहे डॉ. मनु प्रकाश को भौतिकी जीव विज्ञान के क्षेत्र में रचनात्मक कार्य करने के लिए मैक ऑर्थर जीनियस फेलोशिप से नवाजा गया है। उनके द्वारा विकसित किया गया पावरफुल माइक्रोस्कोप रक्त की एक बूंद से मलेरिया की जांच करने में सक्षम है। इस माइक्रोस्कोप से मलेरिया परजीवी का पता लगाने का खर्च महज 50 सेंट्स (33.33 रुपये) आता है। फिलहाल इस माइक्रोस्कोप का प्रयोग मलेरिया की जांच में सफल हुआ है, आगे इसे और समृद्ध किया जाएगा।

अपने शोध कार्य को जारी रखने के लिए डॉ. मनु प्रकाश को मैक ऑर्थर जीनियस फेलोशिप के तहत छह लाख 25 हजार यूएस डॉलर (चार करोड़ 16 लाख 62 हजार पांच सौ रुपये) प्रदान किए गए हैं। वर्तमान में वह स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के जैव

♦ आइआइटी के पूर्व छात्र ने बनाया मोड़कर जेब में रखने वाला माइक्रोस्कोप



डॉ. मनु प्रकाश।

अभियांत्रिकी विभाग में कार्यरत हैं। वह स्वास्थ्य, पारिस्थितिकी व विज्ञान के क्षेत्र में आविष्कार कर रहे हैं। दुनिया भर में केवल 23 वैज्ञानिकों को इस फेलोशिप से नवाजा गया है।

प्रो. अमिताभ के साथ बीटेक प्रोजेक्ट में कर चुके हैं काम

मैक ऑर्थर जीनियस फेलोशिप मिलने पर आइआइटी के कंप्यूटर साइंस के विभागाध्यक्ष प्रो. सुमित गांगुली ने डॉ. मनु प्रकाश को बधाई दी है। प्रो. सुमित गांगुली ने बताया कि आइआइटी कानपुर से वर्ष 2002 में कंप्यूटर साइंस विभाग के छात्र रहे डॉ. मनु प्रकाश ने प्रो. अमिताभ मुखर्जी के निर्देशन में रोबोटिक्स के क्षेत्र में अपना प्रोजेक्ट पूरा किया था। यहां से बीटेक की डिग्री प्राप्त करने के बाद उन्होंने मेसाचुएट्स इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलॉजी, यूनाइटेड स्टेट्स से पीएचडी पूरी की। वह हार्वर्ड सोसाइटी के जूनियर फेलो रह चुके हैं।

Engineers' panel to ensure time-bound construction of 8 IITs

<http://www.hindustantimes.com/education/engineers-panel-to-ensure-time-bound-construction-of-8-iits/story-WzZ6WhKE6K5F7tWFmu47cK.html>

The government is setting up a system to monitor the construction of new IIT campuses in the country in a bid to ensure their completion within the time-frame and avoid cost escalation.

According to sources, the human resources development (HRD) ministry will recruit a panel of chief engineers who will keep track of the progress and quality of ongoing work on the autonomous public institutes of higher education.

In June, the cabinet approved revised cost estimates of eight new IITs that had more than doubled due to lag in schedule and subsequent cost overrun.

The cost of construction of IITs at Bhubaneswar, Gandhinagar, Hyderabad, Indore, Jodhpur, Mandi, Patna and Ropar increased from Rs 6,080 crore to Rs 13,990 crore. The revised estimates are for a period of 11 years from 2008-09, a senior official said.

Several of the proposed IITs are already under construction, sources said.

The issue of cost escalation was taken up at a meeting of the IIT council last month. "The council was informed that the HRD ministry is in the process of setting up a monitoring system as decided by the union cabinet," said a source. "This was to ensure that there are no further cost and time overruns in completing the construction of the eight IITs."

The panel will visit the under-construction campuses and file a detailed report on the progress. "We need to have a system in place so that there is constant monitoring of the construction work, thus ensure there are no lapses," a source said. "In case there are any shortcomings, they can be brought to the notice of the ministry for action."

Efforts are on to also ensure that best construction agencies come into the IITs to undertake work. Thus, the ministry has also decided that IITs suggest the best practices that allow flexibility in choosing the best construction agencies within the framework of General Financial Rules (regarding financial management in government).

The student strength in each of the eight IITs at the end of the project will be 2,360. The total student capacity in these IITs by March 2019 will be 12,880. The direct beneficiaries in terms of numbers will be about 12,880 students.

IIT students fly high, as their satellite Pratham is launched

<http://timesofindia.indiatimes.com/city/IIT-students-fly-high-as-their-satellite-Pratham-is-launched/articleshow/54522863.cms>



Walls lined with charts and logs, a projector streaming live feed from the Sriharikota Space Centre and anxious students checking data and praying silently — this briefly sums up the atmosphere at IIT-Bombay's auditorium yesterday. However, the hushed voices transformed to victorious screams at 9 am as Pratham — the institute's first student satellite — was launched along with the Indian Space Research Organisation's (ISRO) main satellite ScatSat and six others at Sriharikota.



The project, which was conceptualised in 2007, involved seven generation of students. 'From now, India won't be known only for Bollywood but also for technology,' and 'Aaj apna din hai' were some of the phrases that resonated in the air.

The satellite, which is on a four-month mission, is being placed at an altitude of 670 km to measure the total electron count. This information will be useful for correcting GPS errors and other scientific studies. Interestingly, the satellite was said to have passed above India at about 11.30 pm last night. While the current team, which comprises 30 students, hosted the event, former students narrated anecdotes from the past. Manvi Dhawan, the project manager and an ex-student of the institute, said, "There's no scope to falter. The space does not give you a second chance."